

# श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पात्रिका



वर्ष : ९३

मार्च २०२१

अंक : ३

श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर

१

[www.krishnapranami.org](http://www.krishnapranami.org)





वसन्त पञ्चमी उत्सव-श्री ५ नवतनपुरी धाम



प्रणामी ग्लोबल स्कूलमें डिजिटल गेमिंगसे विद्यार्थिओंको शिक्षा

# श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

संस्थापक : ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धनीदासजी महाराज

वि. सं. : २०७७

निजानन्दाब्द : ४३८

बुद्धजी शाका : ३४२

वर्ष : ९३

मार्च २०२१

अंक : ०३

मुद्रक, प्रकाशक  
एवं स्वामित्व

जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं  
प्रकाशन स्थल

श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजड़ा मन्दिर  
जामनगर - ३६१ ००१ ( गुजरात ) भारत

सम्पादक

: स्वामी श्री लक्ष्मणदेवजी महाराज  
श्री कनकराय व्यास

पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर 361 001

फोन : (0288) 267 2829

मो : 08511226600

E-mail : patrika@krishnapranami.org / navtanpuri@gmail.com

Website : www.krishnapranami.org / patrika

## फागोत्सव

सुन्दरसाथजी, हिन्दू संस्कृतिका महत्त्वपूर्ण त्यौहार है फागोत्सव । न्यूनाधिक मात्रामें इसकी विशेषताको हम सभी जानते हैं । भक्तराज प्रह्लादके साथ जुड़ा हुआ यह पावन उत्सव भक्ति प्रेरक है । होलीका आसुरी शक्ति थी, अपनी दृढ़ भक्तिके द्वारा प्रह्लादने उसके ऊपर विजय प्राप्त की । 'असतो मा सद्गमय' के अनुसार असत्यसे सत्यकी ओर अग्रसर होनेका उत्सव फागोत्सव है ।

बरसानेका फागोत्सव सुप्रसिद्ध है क्योंकि वहाँ पर श्री कृष्णजीके साथ श्री राधाजी एवं गोपियाँ बड़े भावसे फाग खेला करती थी । यथार्थमें श्री कृष्ण प्रेम, श्री राधा भक्ति एवं गोपियाँ आत्मस्वरूपा हैं । इस उत्सवके माध्यमसे भक्तिके रंगमें रंगकर प्रेमस्वरूप परमात्माको प्राप्त करना ही आत्माओंका परम लक्ष्य होना चाहिए ।

इस पावन अवसर पर श्री ५ नवतनपुरी धाममें दिनांक २८-०३-२०२१ को धामधनी श्री राजजीके समक्ष श्री १०८ राजभोग अर्पण करनेका आयोजन है और दूसरे दिन होली उत्सव है ।

# श्री तारतम रसास्वाद

( महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत श्री तारतम सागरके किरन्तन ग्रन्थका यह तीसरा प्रकरण है । )

राग केदारो

साधो भाई चीन्हो, सबद कोई चीन्हो ।  
ऐसो उत्तम आकार तोको दीन्हों, जिन प्रगट प्रकास जो किन्हों ॥ १

हे साधुजन ! परमात्माकी पहचान करानेवाले शास्त्र वचनोंके रहस्यको समझो ( इन शब्दोंका ज्ञान प्राप्त कर अपनी अन्तरात्माको पहचानो ) । धामधनीने तुम्हें ऐसा श्रेष्ठ शरीर ( मनुष्य देह ) दिया है, जिसके द्वारा परमात्माका साक्षात् अनुभव किया जा सकता है ।

मानषे देह अखंड फल पाइए, सो क्यों पाएके वृथा गमाइए ।  
ए तो अधखिनको अवसर, सो गमावत मांझ नींदर ॥ २

मनुष्य शरीरके द्वारा ही परब्रह्म परमात्मारूपी अखण्ड फल प्राप्त हो सकता है । ऐसे महामूल्यवान् मानव शरीरको प्राप्त कर उसे क्यों व्यर्थ गँवा रहे हो ? यह अवसर तो आधे क्षणके लिए प्राप्त हुआ है, इसे अज्ञानरूपी निद्रामें पड़कर व्यर्थ गँवा रहे हो ।

सबदा कहे प्रगट परवान, सबदा सतगुरुसों करावे पेहेचान ।  
सतगुरु सोई जो अलख लखावे, अलख लखे बिन आग न जावे ॥ ३

धर्मशास्त्रोंके ( शब्दोंके ) द्वारा यथार्थ ज्ञान प्रकट होता है और वे धर्मशास्त्र ही सद्गुरुकी पहचान भी कराते हैं । जो पूर्णब्रह्म परमात्माकी वास्तविक परख करवाते हैं वे ही सद्गुरु कहलाते हैं । क्योंकि परमात्माकी पहचान हुए बिना अन्तर्दाह ( त्रय ताप ) नहीं मिटती है ।

सास्त्र ले चले सतगुरु सोई, वानी सकलको एक अरथ होई ।  
सब स्यानोंकी एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई ॥ ४

धर्मग्रन्थोंके प्रमाणभूत सिद्धान्तोंके अनुरूप चलने वाले ही सद्गुरु हो सकते हैं । सब धर्मग्रन्थोंकी वाणी समान अर्थ धारण करती है ( अर्थात् एक ही पूर्णब्रह्म परमात्माकी ओर संकेत करती है ) । वास्तवमें सब ज्ञानीजनोंका अभिप्राय भी एक है, किन्तु धर्मग्रन्थोंके सिद्धान्तोंको न समझने वाले अज्ञानीजन उनमें भिन्नता देखते हैं ।

सास्त्रोंमें सबे सुध पाइए, पर सतगुरु बिना क्यों लखाइए ।

सब सास्त्र सबद सीधा कहे, पर ज्यों मेर तिनके आडे रहे ॥ ५

शास्त्रोंमें परमात्माकी सभी सुधि मिलती है, किन्तु बिना सद्गुरुके उसे किस प्रकार समझा जाए ? सर्वशास्त्रमें परमतत्त्वको समझनेके लिए सीधी और सरल बातें कही हैं परन्तु जिस प्रकार आँखके सामने केवल एक तिनका आ जानेसे पर्वत ढँक जाता है, उसी प्रकार मनमें व्याप्त भ्रान्तियोंसे सत्यज्ञान छिप जाता है ।

सो तिनका मिटे सतगुरुके संग, तब पारब्रह्म प्रकासे अखंड ।

सतगुरुजीके चरन पसाए, सबदों बडी मत समझाए ॥ ६

सद्गुरुके समागम द्वारा जब यह भ्रान्तिरूपी तिनका दूर होगा, तभी परब्रह्मका अखण्ड प्रकाश दिखाई देगा । सद्गुरुके चरणोंके प्रताप (कृपा) से ही शास्त्रोंके शब्दोंमें निहित गूढ़ रहस्य समझा जा सकता है ।

तब खोज सबदको लीजे तत्व, तौल देखिए बडी केही मत ।

जासों पाइए प्रानको आधार, सो क्यों सोए गमावे रे गमार ॥ ७

इसलिए हे सज्जन वृन्द ! शास्त्रोंमें निर्दिष्ट वचनोंका मन्थन कर उनके तत्त्वज्ञानको ग्रहण करो । विवेक पूर्वक तुलनात्मक दृष्टिसे देखो कि बड़ी बुद्धि (महामति) कौन हैं ? जिस मानव देह द्वारा प्राणाधार परमात्माकी प्राप्ति होती है, उसे अज्ञान निद्रामें सोकर मूढ़ोंकी भाँति क्यों गँवा रहे हो ?

यामें बडी मतको लीजे सार, सतगुरु याहीं देखावें पार ।

इतहीं वैकुण्ठ इतहीं सुन, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म ॥ ८

ऐसेमें विवेक बुद्धि द्वारा बड़ी मति वालोंके ज्ञानका सार ग्रहण करो । सद्गुरु यहीं पर (इसी संसारमें) पूर्णब्रह्म परमात्माके धामका साक्षात्कार कराते हैं । आत्म-जागृति होने पर यहीं वैकुण्ठ तथा शून्यका अनुभव होगा और यहीं पर पूर्णब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार भी होगा ।

ए वानी गरजत मांझ संसार, खोजी खोज मिटावे अंधार ।

मूढमति न जाने विचार, महामत कहे पुकार पुकार ॥ ९

यह तारतम वाणी इस संसारमें गर्जना कर रही है । खोजनेवाले जिज्ञासु ही खोजकर अपने हृदयके अज्ञानरूप अन्धकारको दूर करते हैं । इसलिए महामति प्राणनाथजी पुकार-पुकार कर इसका रहस्य स्पष्ट कर रहे हैं । मूढ लोग इसका मूल्य न समझनेके कारण इस विषयमें विचार नहीं करते ।



# अपने धनीका मिलना, सो दुख ही से होय ॥

अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु आचार्य श्री कृष्णमणिजी महाराज

सुख और दुःखके द्वन्द्वसे सभी परिचित हैं और सबको यह भी विदित ही है कि इन द्वन्द्वोंसे मुक्त होने पर ही परम सुख अर्थात् आनन्दका अनुभव हो सकता है। इस तथ्यको स्वीकार करते हुए भी कुछ महापुरुषोंने परमात्मासे दुःख मांगा है। इसके रहस्यको भी हमें समझना चाहिए।

सुख और दुःखके द्वन्द्वसे मुक्त होनेकी अभिलाषा अधिकांश मुमुक्षुओंकी होती है। सामान्यतया ज्ञानमार्गमें द्वन्द्वातीत होनेके लिए ऐसा उपदेश दिया जाता है और यह समझाया जाता है कि शरीरके बन्धनसे छूटने पर ही द्वन्द्वोंसे मुक्त हो सकते हैं। यही मुक्ति है। जिन महापुरुषोंने इसी शरीरके द्वारा परमात्माका अनुभव किया है उन्होंने इस शरीरमें रहते हुए ही निर्द्वन्द्वताका अनुभव करनेके लिए कहा है। श्री कृष्णजी भी अर्जुनको इसी प्रकारका उपदेश देते हैं,

निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ।

(गीता २/४५)

हे अर्जुन ! तुम द्वन्द्वोंसे रहित बनो, अन्तःकरणकी वृत्तियोंको परमात्मामें लगाओ, योग और क्षेमसे ऊपर उठो और आत्मभावमें बने रहो। इसी शरीरमें रहते हुए परमात्माका अनुभव करनेवाले महापुरुष प्रेममार्ग या भक्तिमार्गमें स्थित माने जाते हैं। पूर्वजन्मकी साधना एवं परमात्माकी कृपाके द्वारा उनके अन्तःकरण निर्मल हो चुके होते हैं और उनके हृदयमें प्रेमका प्रवाह उमड़ने लगता है। ऐसे महापुरुष भौतिक सुखोंके प्रति लोभायमान नहीं होते हैं और भौतिक दुःखोंसे भी विचलित नहीं होते हैं। वे तो भौतिक

दुःखोंकी प्राप्तिको भी परमात्माकी कृपा समझते हैं। वे समझते हैं कि भौतिक दुःख परमात्माके प्रति प्रेरित करनेवाले हैं और भौतिक सुख परमात्मासे विमुख करनेवाले हैं।

महामति श्री प्राणनाथजी इसीलिए कहते हैं,

दुखसे पीउजी मिलसी, सुखें न मिलिया कोय ।  
अपने धनीका मिलना, सो दुख ही से होय ॥

(किरन्तन १७/१०)

भौतिक दुःख परमात्माके मिलनमें सहयोगी होते हैं जबकि भौतिक सुख परमात्मासे विमुख करनेके लिए प्रेरित करते हैं। इन्हीं दुःखोंके कारण मनोवृत्ति संसारसे विमुख होकर परब्रह्म परमात्माकी ओर लगती है जिससे इसी जीवनमें परमात्माकी प्राप्ति हो सकती है।

महामतिने संसारके दुःख सुखोंको स्वप्नके समान माना है। जिस प्रकार स्वप्नके देखते हुए प्राप्त दुःख सुखकी स्थिति जागृत होनेपर नितान्त मिट जाती है उसी प्रकार आत्मभावमें स्थित होनेपर संसारके दुःख सुख स्वप्नवत् लगने लगते हैं। इसलिए वे स्वप्नके दुःखोंसे भयभीत न होनेका उपदेश देते हैं। यथा,

इन सुपनेके दुखसे जिन डरो, इन दुख बदले सत सुख ।  
अपने माशूक सों नेहडा, तोको देयगो बनायके दुख ॥

(किरन्तन १६/१०)

महामतिका कहना है, संसारके दुःख सुख स्वप्नके हैं क्योंकि संसार ही स्वप्नका है। यह अक्षरब्रह्मका स्वप्न है। जिस प्रकार मानवके स्वप्नके दृश्य क्षणिक होते हैं इसी प्रकार संसारकी भी स्थिति है। इसके सुख दुःख भी क्षणिक ही हैं। इन क्षणिक दुःखोंसे भयभीत नहीं होना चाहिए। वे इन क्षणिक दुःखोंका भी लाभ बताते हैं। ये क्षणिक दुःख परमात्माकी ओर प्रेरित करते हैं। इसलिए ऐसा समझना चाहिए कि इन दुःखोंके बदले हमें परमात्माका अखण्ड सुख प्राप्त होगा। दुःखोंकी प्राप्ति होनेपर मनकी तथा चित्तकी वृत्तियाँ परमात्माकी ओर लगती हैं। इसलिए महामति कहते हैं,

संसारके ये दुःख तुम्हें अपने परमात्माके प्रति प्रेम प्रकट करवानेवाले होते हैं । इसलिए इसने भयभीत न बनो ।

भक्तजन अपने परमात्मासे दुःख मांगते हैं । माता कुन्तीने भी श्री कृष्णजीसे विपत्तियाँ मांगी थी । विपदामें, दुःखमें प्रेमी जन परमात्माका स्मरण कर परमात्माके सान्निध्यका अनुभव करते हैं । इसीलिए परमात्माके सान्निध्यका अनुभव करवानेवाले दुःख प्रेमी भक्तोंके लिए ग्रहणीय होते हैं । तभी महामति कहते हैं,

दुख तो हमारो आहार है, औरन को दुख खाए ।  
दुखके भागे सब फिरे, कोई विरला साध निबाहे ॥  
दुखको निबाहू ना मिले, और सुखको तो सब ब्रह्माण्ड ।  
इन झूठे दुखथें भाग के, खोवत सुख अखण्ड ॥

(किरन्तन १६/४,५)

महामतिका कहना है, दूसरे लोग दुःखोंसे त्रस्त रहते हैं जबकि हम दुःखोंको सहर्ष स्वीकार करते हैं । दुःखोंसे भयभीत होकर भागनेवाले साधक भी अनेक हैं । कोई बिरला ही साधक दुःखोंको स्वीकार करता है । इस जगतमें दुःखोंको निभानेवाले लोग नहीं मिलते हैं । सुखोंकी चाहनावाले तो सभी दिखते हैं । ये लोग यथार्थ समझ नहीं पा रहे हैं इसलिए इन झूठे दुःखोंसे भाग कर अखण्ड सुख खो रहे हैं ।

प्रेमी जनोंकी विशेषता ही यह होती है कि उनके सामने जो भी परिस्थिति आ गई उसे वे सहर्ष स्वीकार करते हैं । वे सदैव परमात्माके प्रेममें मग्न रहना चाहते हैं । उन्हें लगता है कि कभी हम भौतिक सुखोंके प्रलोभनमें परमात्माको भूल न जाँय । इसलिए वे लोग परमात्मासे भौतिक सुख नहीं अपितु दुःख मांगते हैं । भौतिक सुख संसारमें भूलानेवाले होते हैं जबकि भौतिक दुःख परमात्माके प्रति समर्पित करवा कर परमात्माके अखण्ड सुखोंका अनुभव करवाते हैं । इसलिए जो इन क्षणिक दुःखोंसे भाग जाते हैं वे अखण्ड सुखोंसे वञ्चित रह जाते हैं । प्रेमी आत्माएँ कभी भी अपने प्रियतम परमात्माको नहीं कोसती हैं । उनको विश्वास होता है कि परमात्मा



उन्हें दुःख इसलिए देते हैं कि दुःखोंके बिना अज्ञानकी नींद नहीं उड़ेगी । हमारी अज्ञानताको दूर करनेके लिए ही परमात्मा हमें दुःखोंका अनुभव करवाते हैं । महामतिने बड़े ही स्पष्ट शब्दोंमें कहा है,

ता कारन दुख देत हैं, दुख बिना नींद न जाए ।  
जिन अवसर मेरा पीउ मिले, सो अवसर नींद गमाए ॥

(किरन्तन १६/७)

धामधनी हमें दुःखोंका अनुभव इसीलिए करवाते हैं कि इन दुःखोंके बिना हमारी नींद नहीं उड़ेगी । यह अवसर हमें अपने धनीके मिलनेके लिए मिला है । इसके महत्त्वको समझे बिना हम इसे अज्ञानकी नींदमें ही व्यतीत कर रहे हैं ।

मनुष्य परिस्थितिको समझले तो उसे जीनेमें आनन्द आएगा । किन्तु अज्ञानताकी नींदमें जीवन व्यतीत करनेवाले लोग सदैव त्रस्त रहते हैं । ऐसेमें महामतिका कहना है, त्रस्त होकर जीना कोई जीवन नहीं है इसकी अपेक्षा मस्त होकर जीना चाहिए । संसारकी ओर दृष्टि डालनेसे दुःख दिखाई देते हैं । इसी दृष्टिको पूर्णब्रह्म परमात्माके प्रति लगाओगे तो दुःख भी सुखमें बदल जायेंगे । इस जगतमें जो लोग बुद्धिमान् कहलाये हैं उन्होंने भी अपने प्रियतम परमात्मासे मिलनेके लिए दुःखोंकी ही कामना की है । यथा,

बड़ी मत के जो धनी कहे, होय गए जो आगे ।  
तिन भी धनी मिलन को, दुख धनी पे मागे ॥

(किरन्तन १७/७)

महामतिने दुःखोंकी विशेषतायें समझाई हैं । अन्तःकरणके विकार एवं मोहके बन्धनोंको दूर करनेकी सर्वाधिक क्षमता दुःखोंमें ही है । यथा,

दुख दावानल काटत, और काटत सकल विकार ।  
दुख काटत मूल मायाको, बड़े नहीं विस्तार ॥

(किरन्तन १७/२०)

जंगलकी आगको दावानल कहा जाता है । आँधी चलने पर जंगलके वृक्षोंकी शाखाएँ परस्पर टकराती हैं । ऐसेमें यदि सूखी हुई शाखाओंका

घर्षण होता है तो उससे अग्नि प्रकट होती है और वह हवाके द्वारा जंगलमें फैलकर पूरे जंगलको जला डालती है । जिस प्रकार जंगलके वृक्षोंकी शाखाओंके घर्षणसे प्रकट हुई अग्नि पूरे जंगलको जला डालती है उसी प्रकार मानवमनमें उद्भवित विचारोंके घर्षणसे उत्पन्न चिन्ता या सन्तापरूपी अग्नि मानवके जीवनको ही बरबाद कर देती है । इसी चिन्ता या सन्तापको यहाँ पर दावानल कहा है । यदि भौतिक दुःखोंके कारण परमात्माके प्रति प्रेम प्रकट होगा तो उससे सारी चिन्ताएँ नष्ट हो जायेंगी, अन्तःकरणके सभी विकार दूर हो जायेंगे और मायका मूल मोह भी मिट जायेगा । मोहके कारण ही आत्मा बन्धनोंमें जकड़ी हुई होती है । उसे दूर करनेके लिए परमात्माके प्रति प्रेम जितना सक्षम होता है उतनी अन्य साधनाएँ नहीं होती हैं । दुःखोंके कारण ही ऐसा प्रेम प्रकट होता है इसलिए चिन्ता और सन्तापरूपी दावानलको शान्त करनेवाला, सारे विकारोंको दूर करनेवाला एवं मायाके मूल मोहको भी दूर करनेवाला दुःख ही है ऐसा समझकर प्रेमी आत्माएँ दुःखोंकी चाहना रखती हैं अर्थात् दुःखोंसे भी प्रेम करती हैं ।

दुःखोंका महत्त्व समझाते हुए और कहते हैं,  
 बारीक बातें दुःखकी, जो कदी लागे मिठास ।  
 तो टूट जात है ए सुख, होत माया को नाश ॥  
 जाको स्वाद लाग्यो कछु दुःखको, सो सुख कबू न चाहे ।  
 वाको सो दुख फेर फेर, हिरदे चढ चढ आए ॥

(किरन्तन १७/२३, ३३)

दुःखका रहस्य बड़ा ही सूक्ष्म है । हर कोई इसे समझ नहीं पाता है । जो लोग दुःखोंके मिठासका स्वाद लेते हैं उनको कभी भी भौतिक सुखोंकी आशा नहीं रहती है । इस प्रकार मायाका प्रभाव उनसे हट जाता है । जो आत्माएँ दुःखोंकी मधुरताका आस्वादन कर लेती हैं वे स्वप्नमें भी भौतिक सुख नहीं चाहती हैं । उनके हृदयमें प्रियतम परमात्माके विरहकी पीड़ा एवं परमात्माके मिलनका आनन्द छलकता रहता है । ऐसी आत्माएँ सदैव विरह एवं विलासका आनन्द लेती रहती हैं ।

इस प्रकार दुःखोंका महत्त्व प्रेमी आत्माएँ ही समझ पाती हैं। उनको ये भौतिक दुःख अपने प्रियतम परमात्माके प्रेमके उद्दीपक लगते हैं। इसीलिए वे सदैव दुःखोंसे प्रेम करती हैं और विरह एवं विलास दोनोंमें आनन्दित रहती हैं। कहा भी है, **एता सुख तेरे विरहमें तो कौन सुख होसी विहार।** प्रेमी आत्माओंको यही लगा रहता है कि जब परमात्माके विरहमें ही इतना आनन्द है तो उनके साथ नित्य विहारमें कितना आनन्द होगा ?

विरह एवं विलास दोनोंका अनुभव करवानेके लिए मुख्य साधन दुःखको मानकर महापुरुषोंने दुःखोंकी चाहना की है। क्योंकि दुःखोंके कारण परमात्माके प्रति विरह प्रकट होगा। विरहकी तीव्रता प्रेममें परिणत होगी और प्रेमसे परमात्माकी अनुभूति होगी। इसलिए परमात्माकी अनुभूतिके लिए दुःखोंकी भूमिका अति महत्त्वपूर्ण होनेसे दुःखोंका महत्त्व समझाया गया है। यथा,

दुखते विरहा उपजे, विरहे प्रेम इस्क।  
इस्क प्रेम जब आइयां, तब नेहेचे मिलिए हक ॥

(किरन्तन १७/१६)

मनुष्य जीवनका मुख्य ध्येय परमात्माकी प्राप्ति है। मानव शरीर आत्माका वाहन है। हमें यह समझना चाहिए कि परमात्माके मिलनके लिए यह शरीर हमारा वाहन है। संसारकी इस यात्रामें हमें अपने धनी प्रियतम परमात्माका अनुभव होता रहे इसके लिए हृदयमें प्रेमका प्राकट्य होना अति आवश्यक है। प्रेम तभी प्रकट होगा जब परमात्माके विरहकी पीड़ा अन्तःकरणके विकारोंको जला डालेगी। ऐसा विरह भौतिक दुःखोंके संसर्गसे प्रकट होता है। इसलिए भौतिक दुःखोंका महत्त्व बहुत बड़ा होता है। अज्ञानी जन इन दुःखोंसे दूर भागते हैं तो प्रेमी आत्माएँ दुःखोंका आह्वान करती हैं। महामति उक्त चौपाइयोंके द्वारा इसी रहस्यको समझा रहे हैं। इसे समझ कर हम भी दुःखोंसे भयभीत न होकर उनका सहर्ष स्वीकार करते हुए उनके द्वारा विरहकी पीड़ाका अनुभव करनेका प्रयत्न करें और हृदयमें प्रेम प्रकट कर अपने प्रियतम परमात्माके मिलनका अनुभव करें।

# अन्ते आव्यो मनुष्य

ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराज

लाख चौरासी भोगवी, अन्ते आव्यो मनुष्य ।

महामति श्री प्राणनाथजीका कथन है कि यह जीव चौरासी लाख योनियोंमें जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि जैसे अनेक दुःखोंको भोगता हुआ परमात्माकी असीम कृपासे मनुष्य शरीर पाता है। मनुष्य शरीरका चरमलक्ष्य मुक्ति प्राप्त करना है। देवदुर्लभ मनुष्य शरीर प्राप्तकर जिसकी वृत्ति मोक्षसुखोन्मुख नहीं होती है वह जीवोंमें पामर है। क्योंकि स्वर्गस्थित देव अहर्निश मानव देहकी प्राप्तिके इच्छुक रहते हैं।

चौदे लोक इच्छे आ वेला, जोगवाई तमे पाम्या जेह ।

अहनिश कष्ट करे कै देवता, तोहे न आवे अवसर येह ॥

श्री तारतम सागर

चौदह लोककी सभी चेतनामें जिसमें मोक्ष साधन भरपूर हैं, ऐसे इस शुभ अवसरकी इच्छा करते हैं। कारण कि मनुष्य शरीर संसार सागर तरनेका जहाज है। नाक-पृष्ठ-निवासी देवगण अनेक कष्ट भोगते हैं तथापि मनुष्य शरीररूपी साधन उन्हें दुर्लभ है। ऐसे अमूल्य शरीरको प्राप्त कर मोक्षसे विमुख होकर जो विषयमें पामर बना है वह मनुष्य आत्महा है। कहा है,

असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः ।

ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥

ईशावास्योपनिषद्

सम्पूर्ण योनियोंमें मनुष्य योनि ही श्रेष्ठ है। मानव देह परम दुर्लभ भी है। यह शरीर परमात्माकी कृपासे जन्म-मरणसे सदाके लिए छुटकारा पानेके लिए मिलता है। ऐसे शरीरको पाकर जो मनुष्य त्यागपूर्ण भवनासे कर्मसमूहके नाशक परब्रह्म परमात्माकी आराधना



ही करता, साधु सामामगको छोड़कर कामोपभोगमें ही जीवन बिताता है, किसी भी प्रकार विषयोंकी तृप्तिकी इच्छा करता है वह मनुष्य आत्माकी हत्या करने वाला है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवनका पतन कर केवल वृथा जीवन जीता है। इसका फल तो यह हुआ कि स्वयंको प्रगाढ़ कर्मके बन्धनमें बाँधकर अनेक योनियोंका शिकार हो बार बार जरा मरणका दुःख सहता है। इसी कारण श्रुतिने उसको आत्म हत्यारा कहा है। श्रीमद्भागवतके दशमस्कन्धमें लिखा है,

देवदत्तमिमं लब्ध्वा नृलोकमजितेन्द्रियः ।  
यो नान्द्रियेत त्वत्पादौ स शोच्योह्यात्मवञ्चकः ॥

हे परमकृपालु परमात्मा ! आपने इस जीव पर अत्यन्त कृपाकर मनुष्य शरीर दिया है। जो मनुष्य इस शरीरको पाकर भी अपनी इन्द्रियोंको वशमें नहीं करता और शुद्ध भावपूर्वक आपके चरण-कमलोंका आश्रय नहीं लेता, उसका जीवन अत्यन्त शोचनीय है वह अपने आपको धोखा देनेवाला है।

परिणामको न शोचना ही आत्माकी वञ्चना है। जानो कि भावी जन्मकी बड़ेसे लेकर छोटे तकको फिकर नहीं है। महर्षिगणने आत्म सुखकी ओर ध्यान देनेका आदेश किया है, जिसे समग्र विश्व आज भूल गया है। क्षणिक सुखके लिए अनन्त वर्षोंके सुखकी ओर ध्यान न देना इससे विशेष अधःपतन एवं शोचनीय स्थिति कौन सी हो सकती है। तुलसीदासजीने कहा है,

जो न तरे भवसागर नर समाज अस पाई ।  
सो कृतर्निदक मन्दमति आतम हनन गति जाई ॥

सभी प्रकारके साधनोंसे परिपूर्ण मानव देहको धारण कर जो परब्रह्मके अखण्ड धाममें जानेका कर्म नहीं करता अथवा तो इस संसारसे पार नहीं होता वह कृतर्निदक, मन्दमति मानव आत्महत्याकी गतिको प्राप्त होता है। आज मनुष्यकी जो परिस्थिति है, उसका श्री कृष्णने चित्रण किया है।

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका - मार्च २०२१

काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः ।  
मोहाद् गृहित्वा सद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिब्रताः ॥  
चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।  
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥  
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।  
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयात् ॥

अध्याय १६-१०-११-१२

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहज्ञानसमावृताः ।  
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥

अध्याय १६-१६

जिनको चौरासी लाख योनिका चक्र पूरा नहीं हुआ है, ऐसे आसुरी सम्पत्तिवाले अधम जीव बलवत्तर चौरासीके प्रगाढ बन्धनको पुनः पुनः खरीदते हैं। क्योंकि वे दम्भ मान और अहंकारसे युक्त महान् कष्टसे भी पूर्ण न हो सकें ऐसे कामोंका ही आश्रय लेते हैं। अपवित्र व्रतोंको धारण करके निरन्तर अधर्म मार्गमें ही चलते हैं। आसुरी संपत्तिवाले जीव इन्द्रियजन्य सुखको परम पुरुषार्थ मानते हैं। इतना ही नहीं बल्कि विषय भोगको ही श्रेष्ठ मानते हैं। इस प्रकारके निश्चयवाले पामर मनुष्य आजीवन चिन्तामें मग्न रहते हैं। आशाओंके सैकड़ों बन्धनोंसे बँधे हुए और काम तथा क्रोधका आश्रय लेनेवाले इच्छाओंकी तृप्तिके लिए अन्यायपूर्ण अर्थ सञ्चय करते हैं।

अनेक प्रकारके भौतिकवादमें चित्तको फिराते हुए अपने लक्ष्यको चुके हुए मोहरूपी जालमें फंसे हुए, विषय भोगमें अत्यन्त आसक्त बने हुए कनिष्ठ श्रेणीके जीव अपवित्र नरकमें पड़ते हैं।

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम् के अनुसार अधम जीव चौरासी लाख योनिके चक्रसे नहीं छूट पाते। महामति श्री प्राणनाथजीने इस सम्बन्धमें कहा है,

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका - मार्च २०२१

अनेक वार तडफडी मरीने, दुःख देखी आव्यो छो पार ।

लाख चौरासी भमीने आव्या, आहीं मध्य देस वेपार ॥

श्री तारतम सागर

अर्थात् चौरासी लाख वार तड़प-तड़पके तुम मरे तब भी तुम्हें होश नहीं आया । अब तो तुम मानव अवतार भरत खण्ड, कलियुग एवं सत्गुरुके समागममें आये हो, अब तो चेतो । चौरासी लाख योनिके दुःखको भोगकर चौरासीके किवाड़ मानव देहरूप नावमें बैठे हो । अतःएव तुम्हें पार होना कठिन नहीं है । तुम्हारी मुक्ति तो स्वभाविक ही हो सकती है पर तुम अपने आपको सम्भालो, यही चौरासीके जन्म-मरण रूप चक्रमेंसे छूटनेका विशुद्ध उपाय है ।

उपरोक्त सम्बन्धकी पुष्टि करते हुए श्री मद्भागवतमें लिखा है,  
नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं, प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम् ।  
मयानुकूलेन नभस्वतेरितं, पुमान् भवाब्धिं न तरेत्स आत्महा ॥

यह मनुष्य शरीर समस्त शुभ फलोंकी उपलब्धिका मूल है और अत्यन्त दुर्लभ होनेपर भी अनायास सुलभ हुआ है । संसाररूपी सागरसे पार जानेके लिए यह एक सशक्त नौका है । गुरुशरणके ग्रहण मात्रसे वे इसके केवट बनकर पतवारका सञ्चार करने लगते हैं और स्मरण मात्रसे ही मैं अनुकूल वायुके रूपमें इसे लक्ष्यकी ओर बढ़ा देता हूँ । हे प्रिय उद्धव ! इतनी सुविधा प्राप्त होनेपर भी जो इस शरीरके द्वारा संसार रूप सागरसे पार नहीं हो जाता, वह स्वयं ही अपने अधःपतनका कारण बनता है ।

चौरासी लाख योनियोंके जीवकी गिनती भिन्न-भिन्न प्रकारसे बताई गई है । किसीके मतसे मानव देह भी चौरासीके अन्तर्गत है । लिखा है,

बीस स्थिर नव वारिचर, रुद्र कीट दश पक्ष ।

तीस चतुष्पद चार नर, यह चौरासी लक्ष ॥

अन्य कतिपय सन्तोंके मतमें मनुष्य शरीर चौरासी लाख योनिके पश्चात् कहा है । लिखा है,

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका - मार्च २०२१

बीस लाख स्थावर जानौ, नौ लाख सब जलचर मानौ ।  
ग्यारह लाख कृमि कपि गाय, पक्षी गण दश लाख बताय ॥  
तीन लाख पशु जानहु भाई, चार लाख बानर सुखदाई ।  
जब यह चौरासी कटजाई, तब मनुष्यको तन कहुं पाई ॥

इसी सिद्धान्तको श्री प्राणनाथजीने भी अपनाया है। उन्होंने लिखा है “लाख चौरासी भोगवी अन्ते आव्यो मनुष्य” कहकर चौरासीसे बाहर मनुष्य योनिको माना है। कितने ही लोगोंके मतमें अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्भिज इक्कीस-इक्कीस लाख योनियोंकी गणनासे इन चारों खानोंका जोड़ करनेपर चौरासी लाख योनियाँ बनती हैं।

---

## श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका हिन्दी/गुजराती मासिकके सम्बन्धमें

विवरण	: ( फार्म ४ के नियम ८ के अनुसार )
प्रकाशन स्थान	: श्री ५ नवतनपुरी धाम-खीजडा मन्दिर, जामनगर
प्रकाशनकी आवृत्ति	: मासिक
सम्पादक	: स्वामी श्री लक्ष्मणदेवजी महाराज तथा श्री कनकराय व्यास
सम्पादक और मुद्रकका राष्ट्रीय सम्बन्ध	: भारतीय
सम्पादक और मुद्रकका पता	: श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर
प्रकाशक और स्वामित्व	: आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: श्री ५ नवतनपुरी धाम खीजडा मन्दिर- जामनगर

मैं आचार्य कृष्णमणि महाराज एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वासके अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।



# सावधान ! मित्रता सोच समझकर करें

स्वामी श्री १०८ लक्ष्मणदेवजी महाराज

हितोपदेशसमें एक सुन्दर कहानी हैं, कहानी इस प्रकार है, चंपकवती नामक एक अरण्यमें बहुत दिनोंसे मृग और कौवा बड़े स्नेहसे रहते थे। एक दिन किसी गीदडने हृष्ट पुष्ट मृगको स्वतन्त्रता पूर्वक मस्तीसे इधर- उधर विचरण करता हुआ देखा। हृष्ट पुष्ट मृगको देख कर गीदड सोचने लगा, अरे ! मैं इस मृगको कैसे अपना आहार बनाऊ ? उसने सोचा, प्रथमतः मुझे इसके साथ दोस्ती करके इसे विश्वासमें लेना होगा। यह विचार कर गीदड मृगके पास जाकर बोला, हे मित्र, तुम कुशल हो ? मृग ने कहा-मैं कुशल हूँ। "तुम कौन हो ? गीदड बोला, मैं क्षुद्रबुद्धि नामक गीदड हूँ। इस वनमें बंधुहीन होकर मरेकेसमान बेसहारा होकर जीता हूँ। मेरे अपने कोई नहीं है। मैं वर्षोंसे किसी सच्चे मित्रकी तलाशमें हूँ। क्या तुम मेरे मित्र बनोगे ? विचारा भोला भाला मृगने कहा, कोई बात नहीं, मित्रता कर लेते हैं। आजसे निश्चिन्त होकर मेरे साथ रहो।

सूर्य अस्त हो जाने पर मृग उस गीदडको अपने घर ले गया। वहाँ सुन्दर वृक्षकी डार पर मृगका परम मित्र सुबुद्धि नामक कौवा रहता था। कौएने अपने मित्र मृगके साथ दूसरे प्राणीको देखकर कहा, अरे मित्र ! यह अपरिचित दूसरा कौन है ? मृगने कहा, मित्र ! यह क्षुद्रबुद्धि नामक गीदड है। इसने हमारे साथ मित्रताका हाथ बढ़ाया। कौवा बोला, मित्र, अनायास आए हुएके साथ मित्रता नहीं करनी चाहिये।

‘अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित्।’ अर्थात् : जिसका कुल और स्वभावसे परिचय नहीं है उसको कभी भी अपने घरमें नहीं ठहराना चाहिए।

कौवेकी बात सुनकर गीदड अन्दर ही अन्दर झुंझलाया, परन्तु बाहरसे बनावटी करते हुए बोला, अरे काक मित्र ! तुम्हारी और मृगकी मित्रता हुई, उससे पूर्व क्या तुमलोग एक दूसरेके कुल तथा स्वभावसे

परिचित थे ? फिर भी तुम दोनोंमें मित्रता हो गई न ? गीदडने पाण्डित्य दिखाते हुए कहा । कहा भी है न,

**यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि ।**

**निरस्तपादपे देशे एरण्डोह्यपि द्रुमायते ॥**

अर्थात् : जहाँ पंडित नहीं होता है, वहाँ थोड़े बहुत पढ़े लिखेकी भी बडाई होती है । जैसे कि जिस देशमें पेड़ नहीं होते हैं, वहाँ एरण्डके पौधेको भी वृक्षोंकी श्रेणीमें रखा जाता है । गीदड कहने लगा,

**अयं निज परो वेत्ति गणना लघुचेतसां ।**

**उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम् ॥**

यह अपना है, यह पराया है ऐसे विचार करने वालोंकी गिनती तो अल्पबुद्धि वालोंमें होती है । उदारचरित वालोंके लिए तो वसुधा-पृथ्वी ही कुटुंब है । अर्थात् पृथ्वीमें रहने वाले सभी अपने परिवार हैं ।

गीदडने आगे कहा, देखो काग, जिस प्रकार हम (मृग और मैं) मित्र बने गये वैसे ही तुम भी मेरे मित्र बनो । कौवाने अपना तर्क रखा । तब दोनोंकी बात सुनकर मृग बोला, मित्रों ! बादविवादसे किसीको कुछ भी लाभ नहीं होगा । आजसे हम तीनों आपसमें मिलकर एक साथ सुखपूर्वक रहेंगे । वास्तवमें न तो कोई किसीका मित्र है, न कोई किसीका शत्रु । व्यवहारसे ही मित्र और शत्रु बन जाते हैं । मृगके कहने पर कौवेने बात स्वीकार की । दूसरे दिन प्रातःकाल होने पर तीनों अपनी अपनी इच्छानुसार-आहारकी खोजीमें विचरने लगे ।

एक दिन समय पाकर एकांतमें गीदडने मृगसे कहा, मित्र ! इस वनसे थोडा आगे अनाजसे भरपूर हराभरा खेत है । मैं तुम्हें वहाँ ले चलता हूँ । गीदडकी बातसे खुश होकर मृग भी उसी खेतमें गया । सचमूच हरेभरे फसलको देखकर मृग बहुत खुश हुआ । अब तो नित्यप्रति मृग वहाँपर जाने लगा । यह बात जब व्याधको पता चली मृगको पकड़नेके लिए उसने फंदा डाला । दूसरे दिन मृग उस फंदेमें फंस गया । फंसा हुआ मृग सोचने लगा, ओहो ! अब मुझे इस फंदेसे कौन बचा सकता है ? उसने अपने मित्र गीदडको पुकारा ।

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका - मार्च २०२१

कुटिल गीदड़को पता चला कि मृग फंदेमें फंस चुका है। वह वहाँ जाकर उपस्थित हुआ और मन ही मन सोचने लगा, हं ! तुम मेरे चालमें फंस गये। अब तुम्हें मैं मजेसे खाऊंगा।

गीदड़को देखकर मृग प्रसन्न होकर बोला, हे मित्र ! तुम मेरे परम मित्र एवं हितैषी हो। अब मुझे इस बंधनसे छुड़ालो। शीघ्र इस फंदेको काटकर मुझे बचालो। क्योंकि,

**आपत्सु मित्रं जानीयाद् युद्धे शूरमृगे शुचिम्।**

**भार्या क्षीणेषु वित्तेषु व्यसनेषु च बांधवान् ॥**

अर्थात् : आपत्तिमें मित्र, युद्धमें शूर, कर्जाके समय पवित्रताकी, धनका व्यय होनेपर भार्या(पत्नी)की, और विपत्ति अथवा दुःख कष्टके समय भाई (या कुटुंबी) परखे जाते हैं।

गीदड़ मन ही मन प्रसन्न हो रहा था, वह मात्र बाहर मित्रताका भाव दिखा रहा था। गीदड़ने कहा, मित्र ! ये फंदे तांतके बने हुए हैं, इसलिए आज रविवारके शुभ दिन इसको दाँतोंसे काटना या छुना अशुभ है। अतः हे मित्र ! मैं कल प्रातः काल शीघ्र आकर तुम्हें छुड़ाऊंगा। ऐसा कह कर वह वहाँसे निकलकर थोड़ा दूर अपनेको छिपा कर बैठ गया। मृगको अब पता चला कि गीदड़ मित्र नहीं मात्र मित्रताका अभिनय कर रहा था।

सायं काल तक भी अपने मित्र मृगको अपने निवासस्थानमें न लौटने पर कौवा ढूँढता हुआ वहाँ पहुँचा जहाँ मृग फंदेमें फंसा हुआ था। अपने मित्रको फंदेमें फंसा हुआ देखकर कौवेने कहा, हे मित्र यह क्या हुआ ? और कैसे यह सब हुआ ? कौवेकी बात सुनकर मृगने कहा, हे मित्र " मित्रका वचन नहीं माननेका फल है"।

**सुहृदां हितकामानां यः शृणोति न भाषितम्।**

**विपत्संनिहिता तस्य स नरः शत्रुनंदनम् ॥**

अर्थात् : जो मनुष्य अपने हितकारी मित्रोंका वचन नहीं सुनता है उसके निकट ही विपत्ति होती है और वह अपने शत्रुओंको प्रसन्न करता है।

कौवा बोला, "वह ठग कहाँ है ? मृग ने कहा, "मेरे मांसका लोभी यहीं कहीं छुपकर बैठा होगा ? कौवा बोला, मैंने पहले ही कहा था । अपरिचित लोगोंसे मित्रता करना उचित नहीं है ।

“मेरा कुछ अपराध नहीं है, अर्थात् मैंने इसका कुछ नहीं बिगाडा है, अतएव यह भी मेरे साथ विश्वासघात नहीं करेगा” ऐसा कभी नहीं सोचना चाहिए । क्योंकि गुण और दोषको बिना सोचे शत्रुता करने वाले निकृष्ट लोगोंसे सज्जनोंको सदैव सजग रहना चाहिए । चाणक्यने कहा है,

**परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।**

**वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥**

अर्थात् मुँह पर मीठी-मीठी बातें करने वाले परन्तु पीठ पीछे कार्य बिगाड़के लिए ही लगे रहने वाले लोगोंका उसी प्रकार परित्याग कर देना चाहिए जिस प्रकार मुख पर तो दूध, किन्तु अन्दर विष व्याप्त घडेको परित्याग करते हैं ।

कौवेने लंबी सांस भर कर गीदडको नफरत करते हुए कहा कि, "अरे ठग, तुझ पापीने यह क्या किया ?

**दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत् ।**

**उष्णोदहतिचाङ्गारःशीतःकृष्णायतेकरम् ॥**

अर्थात् दुर्जनसे प्रीति(मित्रता) कभी नहीं करनी चाहिये, क्योंकि ये उस कोयलेके समान है जो गरम हो तो हाथको जला देता है और ठंडा होने पर हाथको काला कर देता है । दुर्जनोंका यही आचरण है ।

मच्छर और दुष्ट एक जैसे हैं । मच्छर भी पहले पैरों पर गिरता है, वैसे ही दुष्ट भी पहले पैरों पर गिरता है । जैसे मच्छर पीठ पीछे काटता है उसी तरह दुष्ट भी पीठ पीछे बुराई करता है । जैसे मच्छर कानके पास मीठा धुन बजा कर चुपकेसे कहीं बैठकर खुन चुसता है वैसे ही दुष्ट भी सामने बहुत बढाई चढाई करता है और पीछेसे बुराई करता है । चाणक्यने कहा है,

**दुर्जनः प्रियवादी च नैतद्विश्वासकारणम् ।**

**मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि हलाहलं विषम् ॥**



अर्थात् दुष्ट मनुष्यका प्रियवादी होना यह विश्वासका कारण नहीं है ।  
उसकी जीभके आगे मिठास और हृदयमें हलाहल विष भरा है ।

प्रातःकाल कौवेने वहाँ पर व्याधाको उस स्थान पर आता हुआ देखा,  
उसे देख कर कौवेने मृगसे कहा, हे मित्र, तू अब मरनेका अभिनय कर ।  
अपनेको जमीनमें लेटा दे । पेटको हवासे फुलाकर, पैरोंको ठिठिया कर बैठ  
जा । जब मैं शब्द करूँ, तब तू झटसे उठ कर शीघ्र भाग जाना ।

अपने परम मित्र कौवेके कहे अनुरूप ही मृगने किया । अब जैसे  
ही व्याधा वहाँ पहुँचा तो मृगको उस स्थितिमें देखकर सोचने लगा आहा,  
यह तो अपने आप मर गया । अच्छा हुआ मुझे अधिक मेहनत नहीं करनी  
पड़ी । ऐसा सोचते हुए व्याधा मृगकी फाँसीको खोल कर जाल समेटने  
लगा । उसी समय कौवेने कुछ शब्द किया-कौवेका शब्द सुनते ही मृग  
फटसे उठकर वहाँसे भाग गया । भागते हुए मृगको मारनेके लिए व्याधाने  
तीर चलाया । वह तीर जाकर छुपकर बैठा हुआ गीदड़को लगी । इससे वह  
कुटिल गीदड़ मारा गया । कहा है,

**त्रिभिर्वषैः त्रिभिर्मासैः त्रिभिर्पक्षैः त्रिभिर्दिनैः ।**

**अत्युत्कटैः पापपुण्यैः इहैव फलमश्नुते ॥**

अर्थात् प्राणी तीन वर्ष, तीन मास, तीन पक्ष एवं तीन दिनमें, पाप  
और पुण्यका फल किसी न किसी रूपमें भोगता ही है । अर्थात् कर्म बहुत  
सोच समझकर करना चाहिए । क्योंकि किसी न किसी समय कर्मका फल  
भोगना ही पड़ता ही ।

**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।**

**न भुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि ॥**

अर्थात् मनुष्य जो कुछ भी शुभ या अशुभ (अच्छा या बुरा) कार्य  
करता है उसका फल उसे भोगना ही पड़ता है । अनन्त काल बितने पर भी  
कर्म-फल भोगे बिना समाप्त नहीं होता । अच्छे कर्म पुण्य एवं बुरे कर्म  
पाप कहलाते हैं । पुण्यका परिणाम सुख एवं पापका परिणाम दुःख होता है ।  
अतः हमें हर कर्म बहुत ही सोच समझकर करने चाहिए । इति शुभम् ।

# श्री निजानन्द कथामृत

( ब्रह्मलीन पं. श्री कृष्णदत्त शास्त्री विरचित  
निजानन्द चरितामृतसे )

गतांक ( अंक १ ) पृष्ठ २० से क्रमशः.....

## श्रीजीका वैराग्य और शरीर कसौटी

यद्यपि स्वाप्निक कल्पनास्वरूप मोहमय यह दृश्य जगत मायावरणवश अज्ञानी जीवोंको प्राणोंसे भी अधिक प्रिय और मनोहर लगता है और वे इसीको अपना सब कुछ समझ इसके मिथ्या क्षणभंगुर वैभवोंपर पतंगकी भांति निछावर हुआ करते हैं एवं इन सबका त्याग करना भी उनके लिये कठिन है, परन्तु ब्रह्मानन्दरसके अनुभवमें तल्लीन महापुरुषोंकी जाग्रत आत्मामें इस जगतका मूल्य कुछ भी नहीं है। उन्हें तो किसी भी लौकिक पदार्थ पर मोह नहीं रहता। प्रत्युत वे तो इसकी असारता परसे ही वैराग्य प्राप्त करते हैं। उनकी दृष्टिमें यह सब जगत ही तुच्छ है, तब इसके वैभवोंकी ओर वे दृष्टिपात न करें। यह तो स्वाभाविक है।

यों तो सदाकाल ही श्रीजीकी महान आत्मामें सद्विचारोंकी स्फूर्ति हुआ करती थी, परन्तु अब तो आप और भी असंग हो गए। न तो किसीसे बोलना और न किसीसे बात चीतका प्रयोजन रखना, केवल पचीसों पक्ष परमधामके चिन्तनमें लगे रहें। परन्तु निरन्तर चिन्तन करने पर भी जब कुछ दृष्टिगोचर न होवे तो छटपटाने लगे। एक दिवस अकस्मात् आत्मामें सोचने लगे -

हम आय हैं धामतें, पठये हैं श्रीराज ।  
हमरी टेक निबाहिकैं, सिद्धि करैं सब काज ॥  
हमरो बल श्रीराजसों, चलत सु इतनों नाहिं ।  
देखैं हम निजधाम को, यहीं देखसों याहिं ॥  
अपने मूल स्वरूप के, देखैं सकल चरित्र ।  
वर्तमान जैसे जहां, तब हम होय पवित्र ॥

श्री देवचन्द्र धनी सकल, देखत धाम सरूप ।  
हमको देत लखाईकै, जैसो जाको रूप ॥  
कृपादृष्टि हम पै कहा, नहीं सकैं करि सोई ।  
रूप सहित स्वस्थान सब, हमैं लखावे दोई ॥  
हमरो धाम धनीये पर, चलैं न इतनी जोर ।  
तौ कै नहिं हम धामके, कै हममें है खोर ॥

(वृत्तान्त मु. ३८)

इत्यादि अनेक प्रकारसे विचार करते हैं कि - धामधनी स्वरूप सदगुरु श्री देवचन्द्रजीको सदाकाल परमधामके सब पदार्थ दृष्टिगोचर होते हैं और उन सबके यथार्थ स्वरूपोंको हमें समझाया करते हैं । तो क्या हमारे ऊपर उनकी इतनी भी दया नहीं हो सकती कि हम भी परमधामके स्वरूपोंको इस शरीरसे देख सकें ? इसके अतिरिक्त सदगुरु सदा यह भी कहा करते हैं कि - तुम परमधामसे आये हो । श्रीराजजीसे मिथ्या जगत देखतेको मांगा था, अतएव तुम्हें इसको देखनेके लिये भेजा है । यदि हम परमधामसे आये हैं तो क्या श्रीराजजी हमारी इच्छा पूरी न करेंगे ? श्री धामधनी पर हमारा इतना बल भी नहीं चलता, तब तो हम परमधामके नहीं हैं या तो हमारे अन्दर कुछ अवगुण हैं, जिनके कारण हमें दर्शन हीं होते । इस प्रकार निश्चय कर जितने भी लौकिक विषय थे, सबका परित्याग कर दिया और शरीरको कसौटी पर कसने लगे ।

औगुण ढूँढत आपने, देखे विषय प्रसंग ।  
तजि दीने ते तुरतहीं, स्वाद कसौटी अंग ॥  
प्रगट्यो अंग विरह अति, उरमें भयो विराग ।  
स्नेह न काहूसों रहयो, लख्यो जगत सम आग ॥  
सब अवगुन तजि आपने, करैं अरज उत जाई ।  
गुन हृषीक सूझत नहीं, दीजै हमें जताई ॥

(वृत्तान्त मु.)

एक तो लौकिक विषयोंके प्रति वैराग्य उत्पन्न होनेसे ग्लानि होने

लगी और दूसरे परमधामके दर्शनोके लिये निरन्तर चिन्तन, दोनोंके संघर्षसे शरीरमें एक प्रकारका विरह प्रकट हो गया। किसीके साथ प्रेम न रहा, प्रत्युत जगत अग्निके समान प्रतीत होने लगा। मन, वाणी और कर्मसे सम्पूर्ण दोषोंको परित्याग कर आत्मामें निर्मलता प्राप्त करनेके लिये शरीरको कसौटी पर चढाने लगे। परन्तु जब सम्पूर्ण दोषोंका परित्याग करने पर भी निर्मलता प्रतीत न हुई तो श्री निजानन्दजी सदगुरुकी शरणमें जाकर प्रार्थना करने लगे कि - हे सदगुरु ! मेरे शरीरमें कौन कौन अवगुण भरे हैं, मुझे बता दीजिये। क्योंकि मुझे अपने अवगुण दृष्टिगोचर नहीं होते।

श्रीनिजानन्द सदगुरुजीने कहा-हे मेहेराज ! तुम इन्द्रावतीकी वासना निर्मलात्मा हो। तुम्हारे अंदर कोई विकार नहीं है, तुम इसकी चिंतामें न पडो। इस प्रकार श्री निजानंद सदगुरुका प्रत्युत्तर सुनकर हृदयमें विचार हो आया कि जब श्री निजानंद सदगुरु इन्द्रावतीजीकी वासना कहते हैं तब तो मुझे भी इन्द्रावतीकी चाल चलना चाहिये। ऐसा निश्चयकर श्री निजानंद स्वामी द्वारा जो ज्ञान चर्चा सुनते थे, उसे पुनः विवेचनकर सुन्दरसाथको सुनाने लगे। श्री निजानंद सदगुरुके वचनोंको बड़े ही विवेक और गौरवके साथ श्रद्धापूर्वक वर्णन किया करें। आपने ऊपर श्री सदगुरुके वचनोंका भार लेकर बड़ी श्रद्धासे ब्रह्मसृष्टिके धर्मका उत्तरदायित्व सुंदरसाथको समझाया करें। श्री सदगुरुकी कृपा और तारतम प्रदानका जो ऋण है, उसका महत्त्व वर्णन करते हुए तो कभी अघाते ही नहीं थे। कभी कभी तो सिंधी भाषामें भी सदगुरुजीकी कृपाका महत्त्व दिखाने लगते। यथा-

जान<sup>१</sup> हून<sup>२</sup> कोड<sup>३</sup> धड<sup>४</sup>, धड धड कोड मत्थन ।  
 मत्थां मत्थां कोड मुह<sup>५</sup>, मुह मुह कोड जिभभन<sup>६</sup> ॥  
 हेतरा<sup>७</sup> मिडी<sup>८</sup> तोहिजा<sup>९</sup>, तांजे<sup>१०</sup> गुण गणन<sup>११</sup> ।  
 भाल<sup>१२</sup> तोहिजी<sup>१३</sup> हिकडी<sup>१४</sup>, तोके<sup>१५</sup> कीं<sup>१६</sup> न<sup>१७</sup> पुंजन<sup>१८</sup> ॥

१. एक जीवके, २. होवे, ३. कोटि, ४. शरीर, ५. मुख, ६. जीभ, ७. इतना, ८. मिलकर, ९. तुम्हारे, १०. कदाच, ११. गिने, १२. गुण, १३. तुम्हारे, १४. एक, १५. तुमको, १६. कैसे भी, १७. नहीं, १८. पहुंचते।



सुंदरसाथके समक्ष श्री सदगुरुजीके प्रति कहने लगे कि-हे निजानंद स्वामीजी ! एक एक जीवके करोडो शरीर हो जावे और एक एक शरीरमें कोटि कोटि मुख हो जावें एवं एक एक मुखमें करोडों जीभ होवें, ये सब मिलकर कदाच तुम्हारे गुणोंकी गणना करने लगें<sup>१</sup> तो भी तुम्हारे एक गुणको नहीं पहुंच पाते । तब मैं तुम्हारे गुणोंका तुम्हारी कृपाका वर्णन किस प्रकार कर सकूं । परंतु हे सदगुरुजी ! हम तो आपके चरणों पर निछावर हो चुके, आपकी शरणमें आ चुके । अब हमसे कुछ बने या न बने, आपके शरणार्थी तो हैं । जो सूली पर चढते हैं, उनको कोई भय नहीं रहता, ब्रह्मसृष्टिके मार्गमें श्रीराजजी और परमधामको प्राप्त करना हमारा मुख्य धर्म है । उसके लिये हमें कभी पीछे न हटना चाहिये ।

या विध करै विचार बहु, सबै दिखावत साथ ।

चलौं चालि वपु आपने, होऊं प्रथम सनाथ ॥

इस प्रकारसे अपनेको सदगुरुके वचनों पर निछावर कर मन, इन्द्रिय तथा शरीरको कसने लगे । लौकिक विषयोंका तो परित्याग कर ही चुके थे, अब शारीरिक विकारोंको कम कर आत्माको जाग्रत करनेकी इच्छासे आहार भी कम कर दिया । एक नाममात्र भोजन करने लगे । धीरे धीरे उसे भी घटा दिया केवल दो पैसाभर रह गया । शरीर सूखकर पीला पड गया और इन्द्रियकी शक्ति भी क्षीण हो गई, परन्तु आत्मामें एक

१. अन्य वीतक -जीवन चरित्र लेखकोंने उपर्युक्त दो ही पद्य सिंधी भाषाके लिखे हैं, परंतु ब्रजभूषणजीने दश पद्य लिखे हैं । जिनका भाव बहुत ही गंभीर और हृदयग्राह्य है । उदाहरणार्थ कुछ यहां पर दिये जाते हैं । यथा -

दोसा संदे दायरे पेर परूडे पाइ । जे आसक सूरीय चढ्या द्रिजुतनी जे द्राह ॥

अर्थ - दोसा(दोस्तके), संदे(पास), दायरे(दरबारमें), परूडे(समझके), पेरे(कदम), पाई(रखो), जे(जो), आसक(प्रेमी), सूरीय(सूलीपर), चढ्या(चढे), द्राह(डरसे), द्रिजुतनी(डरते नहीं) ।

दोसा संदे दायरे अच्ची आइ पिया, मत्थो वढे धरण धर ये श्रृंगार सयां ॥

अर्थ- (दोसा)दोस्तके, (संदे)पास, (दायरे)दरबारमें, (अच्ची आइ)आकरके, (पिया)प्यारा, (मत्थो)शिर, (वढे)काटकर, (धरण)पृथ्वीपर, (धर)रख दे, (ये)यह, (सयां)प्यारेकी श्रृंगार शोभा है ।

प्रकारका दिव्य आनन्द प्रतीत होता था। श्री निजानन्द सदगुरुके मुखारविन्दसे जब तक परमधामका वर्णन सुनते रहें, नेत्रोंसे अश्रुधारा बहा करे।

जब लौं चर्चा धामकी, झरै नीर बहु नैन।

भयो देह रंग पीत सब, मुखतें और न बैन ॥

सांसारिक पदार्थोंसे एकदम मोह उत्तर गया। सदा काल अपने आंतरिक दोषोंका अन्वेषण किया करें। कभी हृदयमें विचार उठने लगे कि भूषण वसन और रत्न जटित स्त्रीके अलंकार, ये सब मनको चंचल बनाते हैं, अतः इन्हें भी श्री सदगुरुके चरणोंमें समर्पण कर सुंदरसाथमें खर्च कर डालूं, ऐसा करनेसे हृदय निर्मल हो जायेगा। तदुपरांत बाजारमें जाकर मनकी परीक्षा करूं, किसी ओर दौडता है या नहीं? इस प्रकार निश्चयकर बाजारमें चले जावें और वहां पर मनको चारों तरफ दौडाकर देखा करें कि किस तरफ दौडता है। जब किसी तरफ उसकी गतिको आर्कषित दोते देखें तो उसे खूब धिक्कारने लगते। मार्गमें चलते हुए कभी कोई मित्रके सामने दृष्टि पड़ जावे तो नजर बचाकर निकल जावें, परंतु अपने आध्यात्मिक विचारोंमें किसी प्रकारका अंतर न पड़ने देते।

(क्रमशः.....)

१ दोस्त दिलासा कंनजो जो जव जेतरो होई ।

त अड पहोर आसक नैन्यें निद्र न पोई ॥

अर्थ - (दोस्त)दोस्तके, (दिलासा)दिलासा, (कंन जो)करनेको, (जो)वह, (जव जेतरो)यवके बराबर अर्थात् थोडा भी, (होई)होवे, (त)तब, (पोई)पीछे, (अड पहोर)आठो पहर, (आसिक)प्रेमीके, (नैन्ये)नेत्रोंमें, (निद्र)निद्रा, (न)नहीं, पोई(पड़ती-आती)।

दुष्ट अमे न दाखजे, अन्तरजो अभ्यास । कींगो कस्तूरीय जो कांई न लभे वास ॥

अर्थ - (अमे)हम, (अन्तरजो)अंदरका, (अभ्यास)अनुभव, (न)नहीं, (दाखजे)दिखा सके तो, (दुष्ट)नीच, (कींगो)कैसी, (कस्तूरीय)कस्तूरी, (जो)उसका, (कांई)कुछ भी, (वास)खुशबू, (न)नहीं, (लभे)मिले। अर्थात् हम ब्रह्मसृष्टि होकर ब्रह्मसृष्टिकी चाल न चलें, तो नीच गिने जावेंगे। वह कस्तूरी कैसी जिसमें खुशबू ही न मिले। इस प्रकार सुंदरसाथके सामने धनीके गुणोंका वर्णनकर अपने अंदर ब्रह्मसृष्टिके लक्षण धारण करनेको खूब भार दिया करें। ये पद्य सिंधी भाषाके होनेसे शब्दार्थकी शुद्धता का बराबर पता नहीं लगता।

# 7 Habits of Happy People

## How To Be Happy

**Habit 1 :** खुश रहने वाले लोग अच्छाई खोजते हैं बुराई नहीं ।

Human beings की Natural tendency होती है कि वे negativity को जल्दी catch करते हैं. Psychologists इस tendency को Negativity bias कहते हैं। अधिकतर लोग दूसरोंमें जो कमी होती है उसे जल्दी देख लेते हैं और अच्छाई की तरफ उतना ध्यान नहीं देते पर खुश रहने वाले लोक तो हर एक चीजमें हर एक situation में अच्छाई खोजते हैं, वे जानते हैं कि जो होता है अच्छा होता है। व्यक्तिमें अच्छाई देखनेकी आदम बनानी चाहिए।

एक बात और, आपको अच्छाई सिर्फ लोगोंमें ही नहीं खोजनी है, बल्कि हर एक situation में आपको positive रहना है और उसमें क्या अच्छा है वह देखना है। For example, अगर आप किसी job interview में select नहीं हुए तो आपको यह सोचना चाहिए कि शायद परमात्माने आपके लिए उससे भी अच्छी job रखी है जो आपको देर-सबेर मिलेगी।

**Habit 2 :** खुश रहने वाले माफ करना जानते हैं और माफी मांगना भी ।

हर किसीका अपना -अपना ego होता है, जो जाने -अनजानेमें दूसरोंसे hurt हो सकता है। पर खुश रहने वाले व्यक्ति छोटी मोटी बातोंको दिलसे नहीं लगाते वो माफ करना जानते हैं, सिर्फ दूसरों को नहीं बल्कि खुद को भी।

खुश रहने वाले लोग- यदि उनसे कभी किसी प्रकारकी गलती हो जाती है तो शीघ्र ही क्षमा याचना कर लेते हैं। उन्हें माफी मांगलेनेमें कोई हिचक नहीं होती। वे जानते हैं कि व्यर्थका ego उनकी life को complex बनाएगा इसलिए वो Sorry बोलनेमें कभी कंजूसी नहीं करते।

माफ करना और माफी माँगना हमारे दिलको हल्का करता है। हमें बेकारकी उलझन और परेशान करने वाली thoughts से बचाता है, और as a result हम खुश रहते हैं।

### **Habit 3 : खुश रहने वाले लोग अपने चारो तरफ एक strong support system develop करते हैं ।**

ये support system दो pillars पे टिकी होती है Family and Friends( F & F) जिन्दगीमें खुश रहनेकेलिए FF का बहुत बड़ा योगदान होता है । भले हमारे पास दुनिया भरकी दौलत हो, शोहरत हो लेकिन अगर FF नहीं है तो आप ज्यादा समय तक खुश नहीं रह पायेंगे ।

हो सकता है ये आपको बड़ी obvious सी बात लगे, ये लगे की आपके पास भी बड़े अच्छे दोस्त हैं और बहुत प्यार करने वाला परिवार है, लेकिन इस पर थोडा गंभीरतासे सोचिए । आपके पास ऐसे कितने friends हैं, जिन्हें आप बिना किसी झिझकके रातके ३ बजे किसी भी मदतके लिए phone कर सकते हैं । अथवा यह सोचें, कि सचमूच मेरी प्रगतिमें हृदयपूर्वक प्रसन्न होने वाले लोग कितने हैं ?

Family and friends को कभी भी for granted नहीं लेना चाहिए, एक strong relationship बनाने के लिए हमें अपने हितोंसे ऊपर उठ कर देखना होता है., दूसरे की care करनी होती है, और उन्हें genuinely like करना होता है । जितना हो सके अपने रिश्तोंको बेहतर बनाएं, छोटी -छोटी चीजें जैसे कि Birthday wish करना, बधाई देना, सच्ची प्रशंशा करना, मुस्कुराते हुए मिलना, गर्मजोशीसे हाथ मिलाना, गले लगाना हमारे संबंधोंको प्रगाढ़ बनता है । और जब हम ऐसा करते हैं तो बदलेमें हमें भी वही मिलता है और हमारी जिन्दगीको खुशहाल बनाता है ।

### **Habit 4 : खुश रहने वाले अपने मनका काम करते हैं या जो काम करते हैं उसमें मन लगाते हैं :**

यदि हम अपने interest का, अपने मन का काम करते हैं तो definitely वे हमारी Happiness Quotient को बढाएगा, परन्तु ज्यादातर लोग इतने lucky नहीं होते, उन्हें ऐसी job या business में लगाना पड़ता है जो उनके interest के हिसाब से नहीं होती । पर खुश रहने वाले लोग जो काम करते हैं उसीमें अपना मन लगा लेते हैं, भले ही parallely वो अपना पसंदीदा काम पानेका प्रयास करते रहे ।

कई बार लोग जहाँ job करते हैं उस company की बुराई करते हुए पाये जाते हैं। अपने कामको दुनियाँका सबसे बेकार काम कहते भी सुनाई देते हैं। ऐसा करनेसे life और भी difficult बनता है। खुश रहने वाले अपने कामकी बुराई नहीं करते, वो उसके सकारात्मक पहलुओं पर focus करते हैं और उसे enjoy करते हैं।

हमारा काम हमारी जिंदगीका एक बड़ा हिस्सा होगा और truly-satisfied होनेका एक ही तरीका है की हम वह काम करें जिसको हम सच-मुच एक बड़ा काम समझते हैं। बड़ा काम करनेका एक ही तरीका है की हम वह करें जिसको करते हुए हम enjoy करते हों।

**Habit 5 :** खुश रहने वाले हर उस बात पर यकीन नहीं करते जो उनके दिमागमें आती हैं।

Scientists के अनुसार हमारा brain हर रोज 60.000 thoughts produce करता है, और एक आम आदमीके case में इनमेंसे अधिकतर thoughts negative होती हैं। अगर हम daily अपने brain को हजारों negative thoughts से feed करेंगे तो खुश रहना तो मुश्किल होगा ही।

इसलिए खुश रहने वाले व्यक्ति दिमागमें आ रहे बुरे विचारोंको अधिक देर तक पनपने नहीं देते। वे benefit of doubt देना जानते हैं, वो जानते हैं कि हो सकता है जो वे सोच रहे हैं वह गलत हो, जिसे वे बुरा समझ रहे हैं वह अच्छा हो। ऐसा कर के इंसान relax हो जाता है, दरअसल हमारी सोचके हिसाबसे brain में ऐसे chemical release होते हैं जो हमारी मूडको खुश या दुखी करते हैं।

जब हम नकारात्मक विचारोंको सच मान लेते हैं तो हमारा blood pressure बढ़ने लगता है और हम tense हो जाते हैं, वहीं दूसरी तरफ जब हम उस पर doubt कर देते हैं तो हम अनजानेमें ही brain को relaxed रहने का signal दे देते हैं।

**Habit 6 :** खुश रहने वाले व्यक्ति अपने जीवन या कार्यको किसी बड़े उद्देश्यसे जोड़ कर देखते हैं।

एक बार एक बृद्ध महिला कहीं जा रही थी, उसने एक स्थान पर अनेक



मजदूरोंको कार्य करते देखा। उसने एक मजदूरसे पूछा, -तुम क्या कर रहे हो ? मजदूरने झुंझलाकर कहा- देखती नहीं हो ? मैं ईंटे ढो रहा हूँ। फिर वह महिला दूसरे मजदूरके पास गयी और वही प्रश्न किया, तुम क्या कर रहे हो ? मजदूरने कहा- मैं अपने परिवारके पेट पालनेके लिए मेहनत - मजदूरी कर रहा हूँ ? फिर वह तीसरे मजदूरके पास गयी और पुनः वही प्रश्न किया- तुम क्या कर रहे हो ?

उस व्यक्तिने उत्साहके साथ उत्तर दिया-यहाँ शहरका सबसे विशाल मन्दिर बन रहा है, मैं उसी सुन्दर कार्यमें अपना योगदान दे रहा हूँ।

हम विचार कर सकते हैं उन तीन मजदूर जो एक जैसा ही कार्य कर रहे थे, उनमें कौनसा व्यक्ति सबसे अधिक खुश होगा ?

निश्चित रूपसे तीसरा मजदूर। उसीकी तरह खुश रहने वाले व्यक्ति अपनेको किसी बड़े उद्देश्यसे जोड़ कर देखते हैं, और ऐसा करना निश्चित रूपसे उन्हें आपार खुशी देता है।

**Habit : 7** खुश रहने वाले व्यक्ति अपनी life में होने वाली चीजोंके लिए खुदको जिम्मेदार मानते हैं।

खुश रहने वाले व्यक्ति responsibility लेना जानते हैं। अगर उनके साथ कुछ बुरा होता है तो वे इसका blame दूसरों पर नहीं लगाते, बल्कि खुदको इसके लिए जिम्मेदार मानते हैं। For example: अगर वे office के लिए late होते हैं तो traffic jam को नहीं कोसते बल्कि वे सोचते हैं कि मुझे थोडा पहले निकलना चाहिए था।

अपनी success का credit दूसरों को भले दे दें लेकिन अपनी failure के लिए खुदको ही जिम्मेदार मानें। जब हम अपने साथ होने वाली बुरी चीजोंके लिए दूसरोंको दोष देते हैं तो हमारे अन्दर क्रोध आता है, पर जब हम खुदको जिम्मेदार मान लेते हैं तो हम थोडा disappoint होते हैं और फिर चीजोंको सही करनेके प्रयासमें जुट जाते हैं। ऐसा करनेसे हमारी energy दूसरोंमें fault खोजनेकी जगह खुदको improve करनेमें लगती है, और ultimately हमारी happiness को बढ़ाती है। इति।

। सभी खुश रहें, सुखी रहें।

दृष्टान्त :

## पाँच वर्षका राजा

एक निर्धन विद्वान व्यक्ति चलते चलते पड़ोसी राज्यमें पहुँचा । संयोगसे उस दिन वहाँ हस्तिपटबंधन समारोह था जिसमें एक हाथीकी सूंडमें माला देकर नगरमें घुमाया जाता था । वह जिसके गलेमें माला डाल देता था उसे ५ वर्षके लिए वहाँका राजा बना दिया जाता था ।

वह व्यक्ति भी समारोह देखने लगा । हाथीने उसके ही गलेमें माला डाल दी । सभीने जय जयकार करते हुए उसे ५ वर्षके लिए वहाँका राजा घोषित कर दिया ।

राजपुरोहितने उसका राजतिलक किया और वहाँके नियम बताते हुए कहा कि आपको केवल ५ वर्षके लिए राजा बनाया जा रहा है । ५ वर्ष पूर्ण होते ही आपको मगरमच्छों एवं घड़ियालोंसे युक्त नदीमें छोड़ दिया जाएगा । यदि आपमें ताकत होगी तो आप उनका मुकाबला करके नदीके पार वाले गाँवमें पहुँच सकते हो । आपको वापिस इस नगरमें आने नहीं दिया जाएगा ।

वह निर्धन विद्वान व्यक्ति तो सिहर गया पर उसने सोचा कि अभी तो ५ वर्षका समय है । कोई उपाय तो निकल ही जाएगा ।

उसने ५ वर्ष तक विद्वत्तापूर्वक राज्य किया । राज्यकी संचालन प्रक्रियाको पूरे मनोयोगसे निभाया और इस प्रकार केवल राज्य पर ही नहीं लोगोंके दिलों पर भी राज्य करने लगा । जनताने ऐसा प्रजावत्सल राजा कभी नहीं देखा था ।

५ वर्ष पूर्ण हुए । नियमानुसार राजाको फिरसे हाथी पर बैठाकर जुलूस निकाला गया ।

लोगोंकी आँखोंसे आँसुओंकी झड़ी लग गई । नदीके तट पर पहुँच कर राजा हाथीसे उतरा । राजपुरोहितने कहा कि अब आप नदी पार करके दूसरी ओर जा सकते हैं ।

अश्रुपूरित विदाई समारोहके बीच उसने कहा कि मैं इस राज्यके नियमोंका सम्मान करता हूँ। अब आप मुझे आज्ञा दें और हो सके तो इस निर्मम नियममें बदलाव करनेके बारेमें सोच विचार करें।

जैसे ही राजाने नदीकी ओर कदम बढ़ाए, लोगोंने अपनी सजल आँखोंको ऊपर उठाया। जानते हो वहाँ ऐसा क्या था जिसे देखकर वे खुशीसे नाचने लगे ?

उस नदी पर इस पारसे उस पार तक राजाके द्वारा बनवाया गया एक पुल था जिस पर राजा शांत भावसे चला जा रहा था, नदीके उस पारवाले सुंदरसे गाँव की ओर।.....

क्या ऐसा ही कुछ हमारे साथ भी घटित नहीं हो रहा ?

हमें भी कुछ समयके लिए श्वासोंकी सम्पत्ति देकर इस अमूल्य जीवनकी बागडोर सौंपी गई है।

समय पूरा होते ही हमें यह राज्य छोड़ कर भवसागरके उस पारवाले लोकमें जाना है जहाँसे हमें फिरसे इस राज्यमें आनेकी आज्ञा नहीं है।

यदि हमने अभीसे ही धर्म(जप, तप, ध्यान, दान आदि वगैरे)का पुल नहीं बनाया तो हम मगरमच्छों एवं घड़ियालोंसे युक्त नरकोंमें डाल दिए जाएंगे और उनका ग्रास बन जाएंगे। और अगर हम शांत भावसे भवसागरके उस पारवाले लोकमें जाना चाहते हैं तो अभीसे वह पुल बनानेकी शुरुआत कर देनी चाहिए क्योंकि आयु पूरी होते ही सभीको एक न एक दिन जाना तो निश्चित ही है। इसलिए श्वास होते ही (श्वास श्वास निजनाम जपो, वृथा श्वास मत खोय। ना जानो ये श्वास को, आवन होय न होय ॥) धाम जानेका मार्गको तैयार करते रहेंगे तो हम भी उस राजाकी तरह भवसागरको पार कर पाएंगे।

संकलन - योगेन्द्र उप्रेति

# श्री ५ नवतनपुरी धामसे संचालित विविध सेवा

## ★ पारायण :

१. एक दिवसीय (सामूहिक पारायण).....	: रु. २५००/-
२. त्रि-दिवसीय (अखण्ड पारायण).....	: रु. ५१००/-
३. सात दिवसीय (साप्ताहिक पारायण).....	: रु. २१००/-
४. मेहेर सागरके १०८ पाठकी सेवा.....	: रु. ११००/-
५. विरहके ६ प्रकरणोंके १०८ पाठ.....	: रु. ५५१/-
६. तारतम महामंत्रके २१,०००/ जपकी सेवा.....	: रु. १५००/-
६. श्री राजश्यामाजीके लिए राजभोग (दैनिक).....	: रु. ११००/-
७. श्री राजश्यामाजीके लिए बालभोग (दैनिक).....	: रु. ५००/-
८. प्रतिवर्ष जन्म तिथि/पुष्पतिथि पर आरतीके लिए...	: रु. ११०००/-
९. श्री राजश्यामाजीके लिए अखण्ड दीपककी सेवा...	: रु. ११००/-
१०. पाँच आरतीके लिए घीकी सेवा(एक महीना).....	: रु. १५००/-
११. प्रार्थना ज्योतिकी सेवा (एक दिन).....	: रु. ५००/-

## रसोई तथा अल्पाहार सेवा :

१. पक्की रसोई- भोजन परिकार तथा मात्रा अनुरूप खर्च होगा ।	
२. सुनिश्चित- पक्की रसोई(मेवा मिष्ठान सहित).....	: रु. ११०००/-
२. सुनिश्चित सादी रसोई (मेवा मिष्ठान बिना).....	: रु. ५१००/-
३. अल्पाहार तथा जलपान.....	: रु. २१००/-

## ★ श्री कृष्ण प्रणामी औषधालय

१. मेडिकल केम्प(एक कैम्प).....	: रु.११०००/-
२. औषधालयकी सेवा (प्रति दिन).....	: रु.११००/-

## ★ साधु, सन्त तथा विद्यार्थी सहाय कोष

१. स्वेच्छसे न्यूनतम.....	: रु.११००/-
---------------------------	-------------

## अन्य सेवा

१. मन्दिरके शिखर पर ध्वजा चढानेकी सेवा.....	: रु. ५१००/-
---	--------------

## गौशालाकी सेवा

गाय दान- दूध देनेवाली गाय (एक).....	: रु. १५,०००/-
गाय दान- छोटी बछडी (एक).....	: रु. ७, ५००/-
गौशालाका एक दिनका संपूर्ण खर्च.....	: रु. ११०००/-

## श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाकी सेवा

प्रकाशनकी सेवा (एक महीना).....	रु. ३००००/-
सदस्यता शुल्क (१५ वर्षीय).....	रु. १५००/-
सदस्यता शुल्क (१ वर्षीय).....	रु. १५०/-

## सोलर पैनलकी सेवा

श्री ५ नवतनपुरी धाम हम सभी सुन्दरसाथजीका गुरु स्थान है । यहाँ पर विश्वभरसे सुन्दरसाथ दर्शनार्थ आते हैं । सभी सुन्दरसाथके लिए यहाँ पर आवास एवं भोजनकी अच्छी सुविधा है । यहाँ पर प्रति दिन हजारों एवं महीनामें लाखों रुपयोंकी इलेक्ट्रिसिटी बिल आती है । इसको कम(Reduce) करनेके लिए सन्तभवन एवं स्टुडियो भवनके छत पर १५० सोलर पैनल लगाये जा रहे हैं । पैनल लगानेके लिए फेब्रिकेशनसे संरचना (structures) बनायी गयी है-जिससे मेला महोत्सवमें कुछ सुन्दरसाथको रहनेकी अस्थायी सुविधा भी होगी । इस प्रकार स्ट्रक्चर तथा पूरे पैनलका अच्छा खासा खर्च है ।

आप सभी सेवाभावी सुन्दरसाथसे अनुरोध है कि इस सेवामें अपना योगदान प्रदान करें । आप एक, दो, तीन, चार या इससे अधिक जो भी पैनलकी सेवा प्रदान कर सकें करें ।

**१. एक सोलर पैनलका खर्च : रु.११०००/-**

**अभी तक प्राप्त सेवायें.....**

१. श्री बाईजीराज महिला मण्डल- नवतनपुरी धाम - एक पैनल ।
२. श्री कृष्ण प्रणामी महिला मण्डल-मयूर टाउनसीप - एक पैनल ।
३. श्री पियुषभाई जोबनपुत्रा-हैदराबाद - एक पैनल ।
४. श्री बाईजीराज महिला मण्डल - कृष्णनगर - एक पैनल ।
५. भावना बहन राम - जूनागढ.....





## श्री ५ नवतनपुरी धाममें आयोजित माधी पूर्णिमा सत्संग



ध्वजारोण - श्री ५ नवतनपुरीधाममें दिनांक०१/०३/२०२१ के दिन श्रीकृष्ण प्रणामी महिला मण्डल - मयूर टाउनशिप(जामनगर) के सौजन्यसे आयोजित ध्वजारोहणकी कुछ झलक।



RNI NO. GUJBIL/2006/18311, Postal Reg.No.Jam/GJN-1/2020-21

Validity : Upto 31-12-2023, Date of Publication : 10th of Every Month, Date of Posting : 16th of Every Month

Subscription : Annual Rs.150/-, 15 Years Rs.1500/-, No. of Pages : 36



डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय-सागर (म.प्र)में स्थापित श्री कृष्ण प्रणामी स्वाध्याय पीठके पाठ्यक्रम प्रकाशन तथा पीठके द्वारा भविष्यमें होने वाले विशेष कार्योके संदर्भमें आयोजित बैठकमें सहभागी- श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य परम पूज्य आचार्य महाराजश्री, विश्वविद्यालयके कुलाधिपति डॉ. बलवन्तराय जानी, विश्वविद्यालयके अन्य दर्शन, साहित्य तथा इतिहासादि विषयोंके विशिष्ट प्रोफेसर, स्वामी लक्ष्मणदेवजी महाराज, डॉ. प्रवीणभाई परीख, प्रो. दिलीप आशर एवं श्री कनकराय व्यास । स्थान- श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर । दिनांक-०९.०३.२१ ।